Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ प्रदोष व्रत का महत्व ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ त्रयोदशी और प्रदोष काल ॥

प्रदोष व्रत भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना से जुड़ा है। चंद्र मास के कृष्ण और शुक्ल, दोनों पक्षों में आने वाली त्रयोदशी पर यह व्रत किया जाता है। संध्या के प्रदोष काल में शिव पूजन इसका मुख्य अंग है।

प्रदोष काल क्यों महत्वपूर्ण है

सूर्यास्त के आसपास का संध्याकाल प्रदोष कहलाता है। जिस दिन इस समय त्रयोदशी तिथि रहती है, उसी आधार पर प्रदोष व्रत का दिन चुना जाता है। स्थानीय सूर्यास्त और तिथि के कारण अलग शहरों में दिन या पूजा समय अलग हो सकता है।

महीने में दो अवसर

आम तौर पर हर चंद्र मास में दो प्रदोष आते हैं। सोमवार का सोम प्रदोष, मंगलवार का भौम प्रदोष और शनिवार का शनि प्रदोष नाम से जाना जाता है। अन्य वारों के प्रदोष भी होते हैं; मूल पूजा शिव-पार्वती को समर्पित रहती है।

आस्था का भाव

भक्त इस व्रत में मन की शांति, संयम और परिवार के मंगल की प्रार्थना करते हैं। कथाओं में शिवकृपा से कष्ट दूर होने की बात मिलती है; इसे निश्चित सांसारिक परिणाम का वादा न समझें। श्रद्धा के साथ करुणा और सत्य आचरण रखें।

॥ शिवभक्ति और संध्या साधना ॥

शिव और नंदी का स्मरण

कई मंदिरों में संध्या के समय शिवलिंग के दर्शन, जलाभिषेक, बेलपत्र अर्पण और नंदी के सामने प्रणाम किया जाता है। घर पर शिवलिंग या शिवजी के चित्र के सामने भी सरल पूजा संभव है। मंदिर में वहाँ के नियम मानें।

उपवास और आत्मसंयम

कुछ भक्त दिन में फलाहार करते हैं और शाम की पूजा के बाद व्रत खोलते हैं। कोई केवल एक समय सात्त्विक भोजन और पूजा अपनाता है। उपवास का स्वरूप अपनी सेहत और घर की परंपरा के अनुसार चुनें।

व्यावहारिक महत्व

नियमित संध्या पूजा मन को ठहराव देती है। पूजा के साथ घर में सौम्य व्यवहार, जरूरतमंद की सहायता और स्वच्छता का ध्यान रखना व्रत की भावना को रोजमर्रा में उतारता है।

किसी वर्ष की प्रदोष तिथि और समय के लिए अपने शहर का पंचांग देखें। केवल “त्रयोदशी” लिखी तारीख देखकर संध्या में तिथि के रहने की जाँच छोड़े नहीं।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥